International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 24-02-2026, Accepted: 26-03-2026, Published: 10-04-2026
Volume 12, Issue 2, 2026, Page No. 60-62

शैक्षिक अनुसंधान में शिक्षण पद्धति और मूल्यांकन: भारतीय ज्ञान परम्परा व प्रणाली के परिप्रेक्ष्य में

डॉ.योगेश शर्मा
सह आचार्य, रामगढ़िया कॉलेज ऑफएजुकेशन, फगवाड़ा, पंजाब, भारत

सारांश
भारतीय ज्ञान प्रणालियों केएकीकरण के माध्यम से शैक्षिक अनुसंधान को उपनिवेश से मुक्त करने के लिए शिक्षाशास्त्र और मूल्यांकन रणनीतियों में बदलाव की आवश्यकता है। आधुनिक तकनीकी प्रगति के साथ परामर्श, संवाद, प्रतिबिंब और वैदिक मूल्यों पर जोर, भारत की बौद्धिक विरासत में निहित शोधकर्ताओं के पोषण के लिएक अच्छी तरह से विकसित रूपरेखा प्रदान करता है। अंतिम लक्ष्यऐसे अनुसंधानकर्ता तैयार करना है जो न केवल अकादमिक रूप से कठोर हो बल्कि नैतिक रूप से भी सही हो और समाज के लिए फायदेमंद हो।

मूल शब्दः: भारतीय ज्ञान प्रणालियाँ, शैक्षिक अनुसंधान का उपनिवेशमुक्तिकरण, शिक्षाशास्त्र और मूल्यांकन रणनीतियाँ, परामर्श, संवाद और प्रतिबिंब, वैदिक मूल्यएवं भद्रायां सुमतौयतेम, नैतिक और समाजोपयोगी शोधकर्ता

मैकाले की शिक्षा नीति और स्वतंत्र भारत की सरकारों द्वारा भारत की समृद्ध शैक्षिक संस्कृति को नकारने से बहुत पहले, भारत शैक्षिक प्रथाओं में विश्व गुरु था। चीनी विद्वान – ह्वेन त्सांग, जो प्राचीन नालन्दा विश्वविद्यालय में पढ़ते थे, ने लिखा है कि विश्वविद्यालय में 8500 छात्र निवास करते थे, जिनकी शिक्षा 1510 शिक्षकों केएक निकाय द्वारा संचालित की जाती थी, इस तरह प्रशासनिक और नौकर कर्मचारियों के साथ, विश्वविद्यालय की कुल जनसंख्या अनुमानित 12000 थी (मुर्कर्जी, 1941). शैक्षिक अनुसंधान को उपनिवेशवाद सोच से मुक्त करने और भारतीय ज्ञान परम्परा व प्रणाली को अपनाने के लिए न केवल विषय–वस्तु में बल्कि शिक्षण पद्धति और मूल्यांकन प्रक्रियाओं में भी आमूलचूल परिवर्तन की आवश्यकता है। जैसा कि भारतीय ज्ञान परम्परा व प्रणाली का आदर्श वाक्य है भद्रायां सुमतौयतेम । ऋग्वेद (६।१।१०), जिसका अर्थ है कि हम उस ज्ञान के लिए प्रयास करें जो सभी के कल्याण की ओर ले जाए, शैक्षिक अनुसंधान में शिक्षण तथा मूल्यांकन प्रक्रियाओं को छात्रों कोऐसा अनुसंधान करने के लिए प्रेरित तथा तैयार करना चाहिए जो सभी के कल्याण की ओर ले जाए।

शैक्षिक अनुसंधान का शिक्षण पद्धति

आईकेएस शैक्षिक अनुसंधान के लिए भारत–केंद्रित, अंतःविषयक, नैतिक रूप से आधारित, रचनात्मक, चिंतनशील और समग्र शिक्षाशास्त्र की सिफारिश करता है। स्नातक, स्नातकोत्तर और डॉक्टरेट स्तर पर शैक्षिक अनुसंधान की शिक्षाशास्त्र में निम्नलिखित शामिल हो सकते हैं

शैक्षिक अनुसंधान प्रेरण

शैक्षिक अनुसंधान दीक्षारम्भ का उद्देश्य नए छात्रों को शोध करने के स्वदेशी तरीकों के महत्व को जानने में मदद करना, उनमें भारत की समृद्ध सांस्कृतिक और बौद्धिक परंपराओं पर आधारित शोध की भावना को विकसित करना, उन्हें शैक्षिक अनुसंधान प्रक्रिया में भारतीय मूल्यों और धर्म के बारे में जागरूक करना और देश भर के शोधकर्ताओं के साथ उनके संबंध बनाने में मदद करना होना चाहिए। शिक्षा के क्षेत्र मेंयुवा शोधकर्ताओं को प्रेरित करने के लिए शैक्षिक अनुसंधान दीक्षारम्भ के दौरान कुछ प्रसिद्ध शिक्षाविदों के व्याख्यान आयोजित किए जा सकते हैं। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (2023) ने सिफारिश की कि प्रेरण कार्यक्रम 30 घंटे का होना चाहिए, जहां भारतीय ज्ञान परम्परा व प्रणाली के बारे में जागरूकता, केस अध्ययन और आईकेएस से संबंधित शिक्षाशास्त्र पर चर्चा की जानी चाहिए।

मेंटरशिप

आधुनिक समय की मेंटरशिप तकनीक की जड़ें प्राचीन भारतीय गुरु–शिष्य परम्परा (बेहल और पट्टियाराची, 2023) में खोजी जा सकती हैं। इस शैक्षणिक दृष्टिकोण की सफलता छात्रों के शिक्षक की शिक्षा के प्रति बिना शर्त समर्पण में निहित है। इस समर्पण का प्रतिफल बहुत बड़ा है छात्रों को न केवल ज्ञान प्राप्त होता है, बल्कि तकनीकी कौशल और शोध की सूक्ष्म गहराई भी प्राप्त होती है जो शिक्षक के समान होती है। हालाँकि, इस दृष्टिकोण की सफलता के लिएयह आवश्यक है कि गुरु (शिक्षक) में कल्पना, बुद्धिमत्ता, रचनात्मक क्षमता, स्मृति, कुशाग्रता और सिखाए गए को आकार देने की क्षमता होनी चाहिए, और दूसरी ओर, शिष्य (छात्र) बुद्धिमान, धारणशील, प्रशंसात्मक, समर्पित, उत्साही होने चाहिए और उनमें उत्कृष्टता प्राप्त करने की सहज इच्छा होनी चाहिए (चटर्जी, 1996)।यह दोहरी अपेक्षा शिक्षा के विद्यालयों में सक्षम दिमाग वाले गुरुओं और शिष्यों के चयन की मांग करती है। गुरु–शिष्य परम्परा में छात्र को शिक्षक से व्यक्तिगत ध्यान, मार्गदर्शन और संरक्षण मिलता है। इससे छात्रों के बीच झिझक और अवरोध की बाधा दूर हो सकती है और वे शैक्षिक अनुसंधान के बारे में अपनी शंकाओं और प्रश्नों पर खुलकर चर्चा कर सकते हैं। गुरु–छात्र की मुलाकात नियमित अंतराल पर होनी चाहिए।

संवाद, बहस और चर्चा

भारतीय ज्ञान परम्परा व प्रणाली ज्ञान प्रदान करने की विधि के रूप में संवाद, वाद–विवाद और चर्चा की वकालत करता है। इन तकनीकों के माध्यम से निर्मित ज्ञान व्यक्तिगत और चिंतनशील होता है। संवाद, वाद–विवाद और चर्चा छात्रों को शैक्षिक शोध की प्रक्रिया का आलोचनात्मक मूल्यांकन करने में मदद कर सकती है। छात्र शैक्षिक शोध में वे दक्षताएँ प्राप्त कर सकते हैं जो उपनिवेशित विधियों के माध्यम से प्राप्त नहीं हो सकती हैं। शिक्षक और छात्रों के बीच संवाद शैक्षिक शोध में छात्रों की समझ को बढ़ा सकता है। शैक्षिक शोध के विभिन्न विषयों पर नियमित कक्षाओं में वाद–विवाद और चर्चाएँ आयोजित की जा सकती हैं। छात्रों को शैक्षिक शोध के प्रतिमान, शैक्षिक शोध पद्धतियों की कार्यप्रणाली, पहचानी गई समस्या का महत्व, नमूनाकरण

तकनीक, सांख्यिकीय तकनीक और अध्ययन के निहितार्थ जैसे विषयों पर बहस और/या चर्चा करने के लिए राजी किया जा सकता है। ऑनलाइन फ़ोरम, व्हाट्सएप ग्रुप, ब्लॉग, फ़ेसबुक पेज जैसी आधुनिक तकनीकों का उपयोग छात्रों और शिक्षकों, छात्रों और छात्रोंया छात्रों और बाहरी विशेषज्ञों के बीच संवाद, वाद–विवादया चर्चा के लिए भी किया जा सकता है। हालांकि, आईकेएस की सिफारिश है कि संवाद, बहस और चर्चा को प्रभावी बनाने के लिए, विभिन्न दृष्टिकोण मौजूद होने चाहिए।यहां तक कि रामचरितमानस में भी भगवान की पूजा के लिए अलग–अलग तरीके अपनाने के संकेत दिए गए हैं – हरि अनंत हरि कथा अनंता। कहहिं सुनहिं बहुबिधि सब संता// शिक्षकों और छात्रों को शैक्षिक अनुसंधान की अवधारणाओं और प्रक्रियाओं के बारे में विविध दृष्टिकोण रखने में सक्षम होना चाहिए।

चिंतन और आलोचनात्मक सोच

हमारे वैदिक ग्रंथ आलोचनात्मक सोच के महत्व को स्वीकार करते हैं और मानते हैं कि आत्म–चिंतन के माध्यम से आलोचनात्मक सोच विकसित की जा सकती है। हमारे वैदिक ग्रंथों में ज्ञान सृजन के लिए चिंतन और मनन को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। तर्कशास्त्र और न्यायसूत्र, वैदिक परंपरा के केंद्र में हैं और आलोचनात्मक सोच के लिए रूपरेखा प्रदान करते हैं। शिक्षा की पारंपरिक प्रणाली में, शिक्षणएक जागृति थी न कि केवल पाठ्यक्रम के आधार पर ज्ञान का हस्तांतरण (गुप्त, 2014)। शिक्षणशास्त्र को आन्वीक्षिकी और मीमांसा पर आधारित होना चाहिए। शैक्षिक अनुसंधान का शिक्षणशास्त्रऐसा होना चाहिए कि छात्रों को शैक्षिक अनुसंधान की अवधारणाओं और प्रक्रियाओं पर चिंतन करने तथा उनका आलोचनात्मक मूल्यांकन करने के लिए पर्याप्त अवसर और समय मिले। छात्रों को (i) शैक्षिक अनुसंधान के प्रतिमानों, डेटा संग्रह की तकनीकों, विधियों और सांख्यिकीय तकनीकों और (ii) किसी विशेष अध्ययन की कार्यप्रणाली, डेटा व्याख्या, निष्कर्ष और शैक्षिक निहितार्थों के पीछे के तर्क के बारे में प्रश्न उठाने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

वैदिक मूल्य

स्वामी दयानंद सरस्वती जी ने कहा है कि भारतीय राष्ट्रवाद की दिशा वैदिक मूल्यों के आधार पर होनी चाहिए (राव, 2007)। शैक्षिक अनुसंधान के लिए शिक्षण भी प्राचीन ग्रंथों और संस्कृतियों से प्राप्त भारतीय मूल्यों पर आधारित होना चाहिए। हमारे वैदिक मूल्य जैसे 'सत्यया सच्चाई' और 'ईमानदारी' शैक्षिक अनुसंधान के आधुनिक शिक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। सनातन धर्म अपने कई गुणों में सेएक के रूप में ईमानदारी पर जोर देता है। पतंजलि केयोग सूत्रों में, सत्य पाँचयमोंया पुण्य संयमों में सेएक है, जिसमें कर्म, वचनया विचारों में झूठ से संयम शामिल है, महात्मा गांधी जी ने भी माना कि वैदिक आदर्श – सत्यएक दिव्य गुण है।यदि शिक्षक सत्य और ईमानदारी का प्रतीक है, तो छात्र समय के साथ उसका अनुसरण करेंगे। शैक्षिक अनुसंधान काएक शिक्षक छात्रों से उनके शोध लक्ष्यों के संबंध में अपने स्वयं के मूल्यों की जांच करने के लिए कह सकता है। सत्य और ईमानदारी के वैदिक आदर्श का पालन करके, शैक्षिक अनुसंधान के दृष्टिकोण से पूर्वाग्रह, साहित्यिक चोरी, निम्न गुणवत्ता की समस्याओं को समाप्त किया जा सकता है।

सांस्कृतिक संदर्भ

रचनावादी दृष्टिकोण वर्तमान शिक्षाशास्त्र की आवश्यकताओं में सेएक है। हालाँकि, इसकी जड़ें हमारे अपने वैदिक ग्रंथों में हैं। शैक्षिक अनुसंधान के लिए कुछ शैक्षणिक हस्तक्षेप स्थानीय प्रथाओं से प्राप्त किए जाने की आवश्यकता है। शिक्षक और विशेषज्ञों द्वारा किए गए विचार–विमर्श में स्थानीय सांस्कृतिक अर्थ हो सकते हैं। बहुभाषी दृष्टिकोण शैक्षिक अनुसंधान की अवधारणाओं को बेहतर ढंग से समझने में मदद कर सकता है। इसके अलावा, शैक्षिक अनुसंधान की अवधारणाओं को स्थानीय इतिहास, परंपरा और संदर्भ के उदाहरणों से स्पष्ट किया जा सकता है।

आधुनिक तकनीक

वीर सावरकर जी ने कहा था, "केवलएक जाति विशेष को ही नहीं, बल्कि सभी को वैदिक साहित्य के माध्यम से आधुनिक तकनीक विकसित करके अपने जीवन स्तर को ऊपर उठाना चाहिए।" अपनी प्राचीन जड़ों से जुड़े रहने का मतलबयह नहीं है कि हमें आधुनिक तकनीक से विमुख होना चाहिए।यद्यपि शैक्षिक अनुसंधान के शिक्षक से वैदिक मूल्यों को हृदय में धारण करने की अपेक्षा की जाती है, लेकिन तकनीकी विशेषज्ञता पर भी उसकी पकड़ किसी से कम नहीं होनी चाहिए। शैक्षिक अनुसंधान के शिक्षण–अधिगम में प्रौद्योगिकी के उपयोग को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। शैक्षिक अनुसंधान का शिक्षणशास्त्रऐसा होना चाहिए कि ज्ञान के संचरण और सृजन के लिए आधुनिक तकनीकी उपकरणों का उपयोग किया जाए।

शैक्षिक अनुसंधान का मूल्यांकन

शैक्षिक अनुसंधान में मूल्यांकन, भारतीय ज्ञान परम्परा व प्रणाली के सिद्धांतों और प्रथाओं के अनुरूप होना चाहिए। छात्रों की चिंता के स्तर को उचित सीमा के भीतर बनाए रखने के लिए शिक्षण और मूल्यांकन के बीच उचित समन्वय होना चाहिए। जैसा कि भारतीय ज्ञान परम्परा मौखिक और संवाद आधारित शैक्षणिक प्रथाओं पर जोर देते हैं, इसलिए शिक्षा अनुसंधान में मूल्यांकन प्रक्रियाओं में मौखिक और संवाद आधारित प्रक्रियाओं को शामिल किया जाना चाहिए।

शैक्षिक अनुसंधान के विषय में छात्रों का मूल्यांकन विषय की वैचारिक समझ और किए गए शोध कार्य की गुणवत्ता के संदर्भ में किया जाना चाहिए। हालाँकि, इन दोनों पहलुओं में, मूल्यांकन प्रक्रियाओं को समेटिव से फ़ॉर्मेटिव असेसमेंट की ओर बढ़ने की आवश्यकता है। हमारे स्वदेशी मूल्य त्यागने के बजाय सुधारने और/या मरम्मत करने में विश्वास करते हैं। पंचतंत्र की प्रसिद्ध कहानी बंदर और मगरमच्छ, अप्रत्यक्ष रूप से हमें दोस्ती को त्यागने के बजाय सुलह का संदेश देती है। इसी तरह, मूल्यांकन प्रक्रियाएँ भीऐसी होनी चाहिए जो छात्रों को सुधार करने के लिए पर्याप्त प्रतिक्रिया और समय प्रदान करें। हमें शिक्षा मेंयुवा शोधकर्ताओं की शोध संबंधी परेशानियों को सुधारने की जरूरत है, न कि उन्हें पासया फेल के रूप में वर्गीकृत करने की। शोध प्रबंध/थीसिस के लिए विशेष रूप से मूल्यांकन प्रक्रिया चरणबद्ध तरीके से हो सकती है। शोध के प्रत्येक चरण के लिए समस्या की पहचान और कथन, संबंधित साहित्य की समीक्षा, विधि और प्रक्रिया, डेटा विश्लेषण और व्याख्या, और सारांश, मौखिक आंतरिक और/या बाह्य मौखिक परीक्षा की जा सकती है। जिसका उद्देश्य शोध कार्य में गुणवत्ता लाना होना चाहिए।

संदर्भ सूची

1. गुप्त, बी. (2014)। शिक्षा में भारतीय विरासत को पुनर्जीवित करना। वर्ल्ड अफेयर्स: द जर्नल ऑफ इंटरनेशनल इश्यूज, 18(4), 112–125।
2. चटर्जी,ए. (1996)। भारतीय शास्त्रीय नृत्य में प्रशिक्षण:एक केस स्टडी।एशियन थिएटर जर्नल, 13(1), 68–91।
3. बहल,एम. और पट्टियाराची, सी. (2023)। आधुनिक समय की मेंटरशिप के लिए गुरु–शिष्य परंपरा की प्रासंगिकता। समुद्र विज्ञान, 36(1), 74–75। https:@@doi-org@10-5670@oceanog-2023-111

4. राव, के.एस.एस. (2007)। वैदिक आदर्श और भारतीय राजनीतिक विचार। इंडियन जर्नल ऑफ पॉलिटिकल साइंस, 68(1), 105–114।
5. मुर्कर्जी, आर.एम. (1941)। प्राचीन भारत में शिक्षा के व्यावहारिक पहलू । भारतीय इतिहास कांग्रेस की कार्यवाही, 1941, 5, 127–134 ।